*अध्ययन सामग्री
विषय- हिन्दी
स्नातक प्रतिष्ठा(खण्ड-3)
प्रश्न पत्र- षष्ठ
भ्रांतिमानअलंकार का लक्षण एवं उदाहरण
पदनाम- डॉ स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एच डी जैन कॉलेज, आरा*

12:55 ✓✓

Scanned with CamScanner

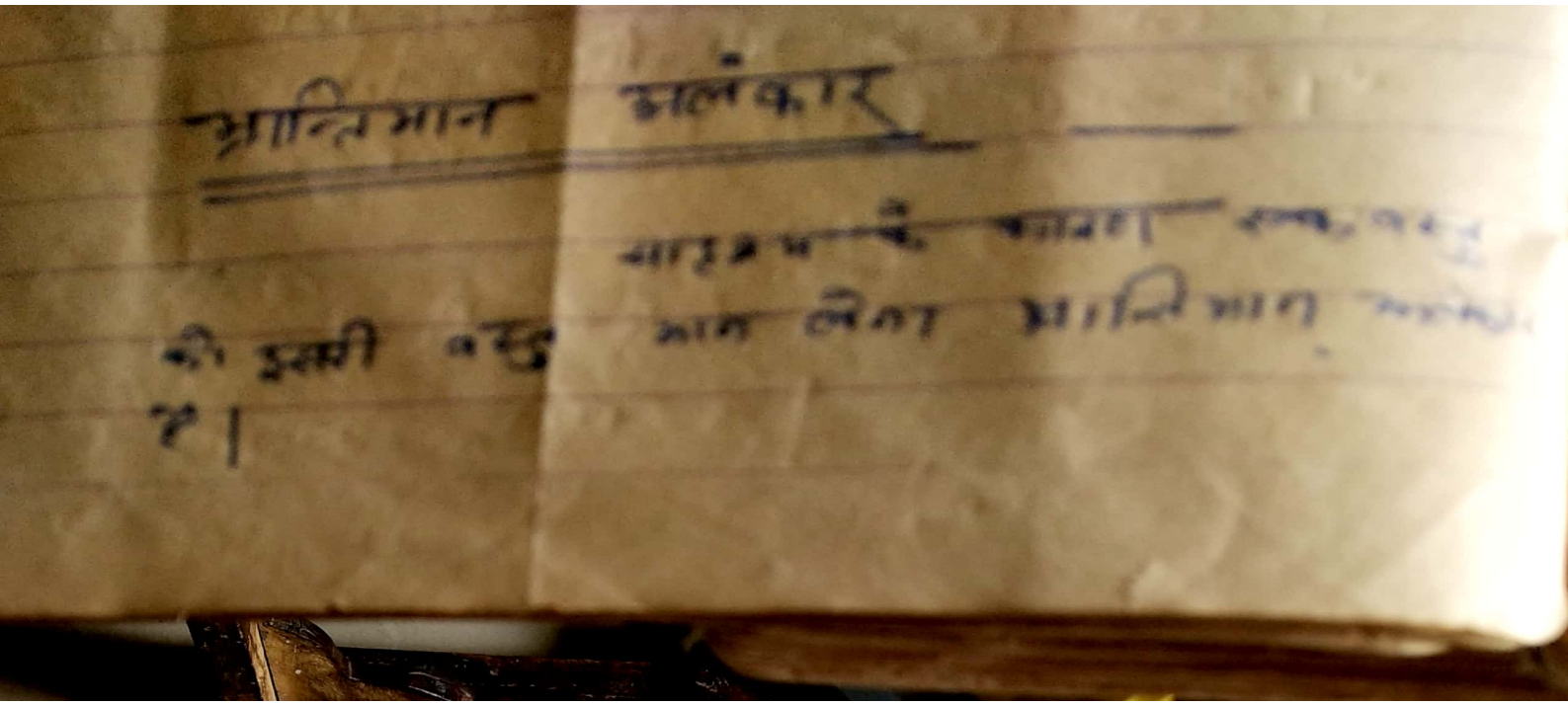

भ्रान्तिमान अलंकार

सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना भ्रान्तिमान अलंकार है।

Scanned with CamScanner

"पाय महावर देन को, नाइन बैठी आय।
फिर-फिर जानि महावरी, एँड़ी मीड़ति जाय॥

यहाँ नाइन को नायिका की एड़ी में (अतिशय लाली के कारण) महावर की गोली का भ्रम हो जाता है, अतः महावर लगाने के लिए उसकी गोली को जल में न मलकर बार-बार एड़ी को ही मल रही है।

"नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है, अन्य शुक यह कौन है?'

यहाँ उर्मिला की नाक और मोती में अनार का दाना पकड़े हुए शुक का भ्रम धर के पाले शुक को हो रहा है।